संदेश-पत्र

अंतर्मार्ग पर साहस

प्यारी ध्यान सिद्धि,

प्रेम।

ध्यान एक दर्पण है।

और, सबसे अधिक विश्वसनीय।

जो भी कोई ध्यान में जाता है उसे स्वयं से साक्षात्कार करने का खतरा उठाना पड़ता है।

और ध्यान का दर्पण कभी झूठ नहीं दर्शाता।

और वह झूठी प्रशंसा भी नहीं करता।

वह पक्षपात-रहित व निर्दोष होता है।

और वह कुछ प्रक्षेपित भी नहीं करता।

वह बड़ी विश्वसनीयता से आपका वास्तविक मौलिक चेहरा दिखलाता है। वह चेहरा जो हम कभी दुनिया को नहीं दिखलाते।

वह चेहरा जो कि हम स्वयं भी भूल गए हैं।

इसलिए संभव है कि तुम स्वयं भी पहली बार उसे पहचान न पाओ।

परंतु उससे पलायन न करो।

उसका सामना करो और तुम उसे जान लोगी और पहचान लोगी।

यह साक्षात्कार ही प्रथम परीक्षा है साहस के अंतर्मार्ग पर।

इसलिए जब कभी ऐसा हो—आनंद मनाओ और स्वयं को धन्य समझो।

—ओशो
मौन संगीत